ASSIGNMENT REFERENCE MATERIAL (2019-20)

MSO-01

समाजशास्त्रीय सिद्धांत एवं संकल्पनाएं

भाग I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. समाजशास्त्रीय विश्लेषण में संकल्पना एवं सिद्धांत की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले शब्दों से तकनीकी शब्दावली का निर्माण होता है। इन तकनीकी शब्दों से संकल्पनाओं का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए मनुष्य को ध्यान में रखते हुए जीवविज्ञानी 'होमोसेपियन' या 'वाइज मैन' का प्रयोग आधुनिक मनुष्य का उल्लेख करने के लिए करते हैं। यदि कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तो सामान्य भाषा में लोग कहते हैं कि उसे बुखार हो गया है। जैसे-जैसे खोज अत्याधुनिक बनती जाती है 'मलेरिया' 'इंफ्ल्युएंजा' जैसे शब्द बुखार की प्रकृति को दर्शाते हैं। ये शब्द यह भी दर्शाते हैं कि कौन से भाग या कीटों ने शरीर को प्रभावित किया है। तब हम रोग की प्रकृति और कारणों को भी समझते हैं। इसका अगला कदम गोलियों या टीकों के प्रयोग के माध्यम से उचित देखभाल करना है। जब बुखार या रोग को इसके घटकों की दृष्टि से स्पष्ट किया जाता है और उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का पता होता है तो हमें पता चलना शुरू हो जाता है कि किस प्रकार ये बातें जुड़कर आपस में एक दूसरे से जुड़ जाती हैं। प्रत्येक पैमाना चिकित्सक को रोग की प्रकृति को समझने एवं इसके विश्लेषण को परखने में सहायता करता है। इस प्रकार शरीर का तापमान, रक्तचाप, शर्करा या मूत्र में रुधिर शर्करा की मात्रा को मापा जा सकता है। इन सभी शब्दों एवं इनके पैमानों का सुनिश्चित अर्थ है। इस प्रकार ऐसे टेस्ट चिकित्सक के अलावा अन्य व्यक्तियों द्वारा भी किए जाते हैं। पैमानों को स्पष्ट करने वाले शब्द संकल्पनाएँ बन जाते हैं और सभी तकनीशियन इन्हें सामान्य रूप से समझ सकते हैं। ऐसी सामान्य समझ बोडिज या एंटी-बोडिज के सामान्य या रोग विज्ञान संबंधी बंटन का पता लगाने में सहायता करती है और उनके विशेष संयोजन से चिकित्सक को रोग का निर्धारण करने एवं इसका हल खोजने में सहायता मिलती है।

समाजवादी विश्लेषण में संकल्पना और सिद्धांत की भूमिका : संकल्पनाएँ सिद्धांत निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रत्येक संकल्पना एक घटना विशेष को व्यक्त करती है। ऐसा करते समय घटना विशेष को शेष जगत से पृथक् रखा जाता है। समाजशास्त्र में प्रयुक्त अनेक अवधारणाएँ या संकल्पनाएँ इसी प्रकार की हैं। जैसे : संस्कृति, व्यक्तित्व, अंत:क्रिया, प्रस्थिति, भूमिका आदि। संकल्पनाएँ परिभाषाओं द्वारा निर्मित होती हैं। परिभाषा शब्दों की एक व्यवस्था है। यह तर्कों की प्रतीक या गणितशास्त्रीय प्रतीक है। यह अनुसंधानकर्त्ताओं को एक सामाजिक प्रघटना के संबंध में अवधारणा के माध्यम से जानकारी प्रदान करती है। उदाहरण के रूप में प्रतिस्पर्धा की संकल्पना उसी समय कोई अर्थ रखती है, जब इसे परिभाषित किया जाए।

प्रतिस्पर्धा की परिभाषा इस प्रकार हो सकती है, 'प्रतिस्पर्धा, दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों का समान उद्देश्य, जो इतना सीमित है कि सब उसके भागीदार नहीं बन सकते, को पाने की होड़ है।' यह परिभाषा अनुसंधानकर्त्ताओं को एक घटना विशेष जिसे कि अवधारणा के माध्यम से व्यक्त किया गया है, को बतलाती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अनुसंधानकर्त्ता को किसका अध्ययन करना है।

वास्तव में जिन संकल्पनाओं का सिद्धांत निर्माण की दृष्टि से प्रयोग किया जाता है, उनमें एक गुण यह होता है कि उनका उपयोग करने वालों में वे समान अर्थ का संचार करें। चूँकि समाजशास्त्र में संकल्पनाओं के विकास में पहले प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाता है, अत: उन्हें स्पष्टत: परिभाषित किया जाना आवश्यक है। इसके अभाव में संकल्पनात्मक अस्पष्टता पनपेगी जो इसके सिद्धांत निर्माण में बाधाक है। मनुष्य होने के नाते हम अपने कार्यों को स्पष्ट करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। वास्तव में भाषा शब्दों या शब्दों का वह समूह होता है, जिसमें मुनष्य आपस में अंत:क्रिया करते हैं। अंत:क्रिया के दौरान जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, मनुष्य को उसकी समझ होती है। इस प्रकार मनुष्य धीरे-धीरे ऐसे शब्दों का प्रयोग करने लगता है जिनका अर्थ समुदाय के सभी लोगों द्वारा एक ही अर्थ में लिया जा समझा जाने लगता है। भाषा वास्तव में एक सामाजिक उत्पाद है। इसमें शब्दों को एक अर्थ दे दिया जाता है और यह अर्थ सभी को सामान्यत: स्वीकृत होता है। इस तरह सामाजिक अंत:क्रिया सुविधाजनक हो जाती है।

2. शक्ति (सत्ता) क्या है? शक्ति प्राप्ति के साधनों की चर्चा कीजिए।

उत्तर - किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह के व्यवहार को अपनी इच्छानुसार प्रभावित करने की योग्यता को सत्ता कहते हैं। सत्ता सदैव दो के बीच सामाजिक संबंधों को अनिवार्य बनाती है। यह कहना कि किसी व्यक्ति के पास सत्ता है, निरर्थक है यदि यह न कहा जाए कि वह सत्ता किस पर प्रयोग की जाती है। सत्ता रखने वाला एक व्यक्ति या व्यक्तियों का एक समूह, दूसरों से वह करवा सकता है, जो वह करवाना चाहता है। यदि वे, जिन पर सत्ता प्रयोग की जा रही है, आज्ञा पालन से इंकार अथवा विरोध करते हैं तो उन्हें किसी न किसी प्रकार से दंडित किया जाता है। सत्ता सदैव संबंधों में विषमता पैदा करती है। जिन लोगों की सीमित संसाधनों तक अधिक पहुँच है जैसे वित्त पर नियंत्रण, उत्पादन अथवा वितरण के साधनों का स्वामित्व अथवा नियंत्रण वे उनसे अधिक सत्ताशाली होते हैं जिनके पास साधन नहीं है अथवा जिन्हें इनके नियंत्रण का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। अपनी इच्छा को थोपने के लिए दंड विधि का प्रयोग सत्ता का एक महत्त्वपूर्ण अंग है और इसी आधार पर यह प्रभाव से भिन्न है।

कोसर ने सत्ता की संकल्पनात्मकता के लिए दो परंपराओं (प्रथाओं) को रेखांकित किया जिन्हें सामाजिक लेखों में पहचाना जा सकता है। यहाँ दो प्रश्न प्रासांगिक हो जाते हैं, कुछ लोगों के पास सत्ता क्यों होती है जबकि दूसरों के पास यह नहीं होती। मजबूत व्यक्ति के पास सत्ता होती है और वह आदेश देता है जबकि कमजोर लोगों के पास सत्ता नहीं होती और वे आज्ञा का पालन करते हैं। लेकिन यह हमेशा सत्य नहीं होता। यह कहा जा सकता है कि संसाधनों में असमानता से सत्ता में असमानता आती है। अत: यदि एक निश्चित क्षेत्र में संसाधन समान रूप से संतुलित हो, तो दो के बीच कोई सत्ता संबंध नहीं होगा। सत्ता के साधन या उपकरण से आशय होता है सत्ता लागू करने या सत्ता के साधन। सत्ता रखने अथवा सत्ता लागू करने के तीन उपकरण अथवा साधन हैं। वे हैं :

(1) दमनकारी सत्ता को, दूसरों को धमकाने, डराने तथा तकलीफ पहुँचाने तथा दूसरों पर गंभीर परिणाम देने वाले हमलों से स्वीकृति प्राप्त होती है। इसमें किसी भी प्रकार से हानिकारक कार्यवाही या दंड, संसाधन अथवा संपत्ति हथियाने, झिड़कने और किसी व्यक्ति अथवा जाति की निंदा करने के रूप में क्षतिकारक कार्यवाही की धमकी शामिल होती हैं। इस प्रकार की सत्ता की प्रक्रिया ऐसी स्थितियों में होती है जहाँ दूसरों को आधीन बनाकर उनकी इच्छाओं और प्राथमिकताओं पर प्रतिबंध लगाकर उन पर वैकल्पिक इच्छाओं अथवा प्राथमिकताओं को थोपने की क्षमता के माध्यम से अप्रिय और पीड़ादायी प्राथमिकताएँ थोपी जाती है।

(2) क्षतिपूरक सत्ता दूसरों को सकारात्मक कदमों से व्यक्ति अथवा समूह को ईनाम के रूप में कुछ देकर उनकी अधीनता को अर्जित करती है और वे दमन के समक्ष घुटने टेक देते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में क्षतिपूर्ति कई प्रकार से हो सकती है जैसे सेवा के लिए नकद अथवा वस्तु के रूप में ईनाम देकर, किसी भूखंड पर काम करने का अधिकार देकर अथवा जमींदार के खेत के उत्पादन में से हिस्सा देकर। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से विकास के लिए आर्थिक सहायता का पैकेज देकर अथवा सामाजिक राजनीतिक दृष्टि से अशांत क्षेत्र अथवा समुदाय को आर्थिक सहायता आधुनिक परिस्थिति में क्षतिपूरक सत्ता का एक अन्य उदाहरण हो सकता है।

(3) सत्ता का तीसरा साधन अथवा उपकरण अनुबंधित सत्ता है जो दमनकारी अथवा क्षतिपूरक सत्ता के विपरीत व्यक्तिनिष्ठ है। इस मामले में न तो सत्ता प्रयोग करने वाले और न ही इसको सहने वालों को इसके प्रयोग के प्रति सजग अथवा जानकार होना आवश्यक है। इस प्रकार की सत्ता व्यक्ति अथवा समूह के विश्वास और प्रवृत्ति को बदल कर प्राप्त की जाती है। इस परिस्थिति में एक व्यक्ति अथवा समूह दूसरों की इच्छा को इसलिए स्वीकार करता है क्योंकि वह मानता है कि जो पहल की गई है वह दृढ़ विश्वास, शिक्षा, सामाजिक प्रतिबद्धता अथवा वायदों के माध्यम से ठीक दिखाई देती है। वे उस पहल को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे महसूस करते हैं कि यह ठीक दिशा में उठाया गया कदम है। ऐसी स्थिति में अधीनता की अभिस्वीकृति अनिवार्य नहीं है। अनुबंधित सत्ता आधुनिक समाज में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और व्यापक प्रकार की सत्ता है चाहे वह आर्थिक और राजनीतिक पक्ष हों तथा पूँजीवादी और समाजवादी देशों में भी इस प्रकार की सत्ता महत्त्वपूर्ण है।

3. मार्क्सवादी और वेबरवादी विचारधारों के अंतर की जाँच कीजिए।

उत्तर - मार्क्सवाद के प्रवर्तक काल मार्क्स का जन्म 1818 ई. में जर्मनी में हुआ। वे एक दर्शनशास्त्री होने के साथ-साथ सामाजिक विज्ञानी एवं समाजशास्त्री भी थे। मार्क्स के बुनियादी सूत्रों में शामिल हैं : ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग एवं वर्ग संघर्ष, अधिशेष मूल्य का सिद्धांत एवं अलगाववाद (विसंबंधन)। मार्क्स के सूत्रों ने समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए पूर्व चर्चित क्रियाओं से हटकर एक नई दिशा दिखाई। विश्व के वामपंथी राजनीतिक दलों द्वारा मार्क्स के सिद्धांत को एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में भी प्रयोग में लाया गया और हाल ही तक विश्व का एक अच्छा खासा भाग विश्व के कम्युनिस्ट दलों के शासन के अधीन रहा है। 1989 में और इसके आसपास दूसरे विश्व से संबद्ध विविध देशों की विविध राजनीतिक व्यवस्थाओं ने उस समय मौजूद दो महाशक्तिशाली देशों के बीच चलने वाले शीत युद्ध की समाप्ति पर उनका पतन हो गया। इन सभी देशों ने अपने राजनीतिक दिशा निर्देशों के रूप में मार्क्स के सैद्धांतिक सूत्रों का प्रयोग किया था।

मार्क्स के सैद्धांतिक सूत्र पूर्व चर्चित लेखकों से एक मुख्य बिंदु पर पृथकता प्रतिबिंबित करते हैं। मार्क्स की विधि में 'तर्कशास्त्र' के सिद्धांत शामिल थे जिनकी पहले के किसी भी समाजशास्त्री ने चर्चा नहीं की थी। सिद्धांत के रूप में तर्कशास्त्र की धारणा का प्रयोग समग्र रूप से मार्क्स की नई खोज नहीं थी। पहले इसका प्रयोग उसके सहकर्मी जी.डब्ल्यू.एफ. हेगल ने किया था। मार्क्स के सैद्धांतिक सूत्र में जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था, वह द्वंद्वात्मक विधि की सहायता से समाज की भौतिकवादी व्याख्या थी। जैसा कि हेगल के मामले में उसने तर्कशास्त्र के माध्यम से आदर्शवाद के जरिए समाज की प्रगति को देखा। मार्क्स के मामले में भौतिकवादी तर्कशास्त्र के माध्यम से समाज की प्रगति संभव थी। मार्क्स की रचनाओं में अन्य महत्त्वपूर्ण पृथकता ऐतिहासिक विधि पर उनका जोर देना था। जब तर्कशास्त्र के सिद्धांत का प्रयोग इतिहास के अध्ययन के लिए किया गया तो इसे ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा गया। समाज की भौतिकवादी व्याख्या मुख्यतया सामाजिक स्थिति को शामिल करती है जो जन के विचारों की रूपरेखा बनाने में सहायता करती है। कुछ स्थानों पर ऐतिहासिक भौतिकवाद की धारणा का प्रयोग हमेशा संबद्ध द्वंद्वात्मक भौतिकवाद से विनियम किया गया है। मार्क्स के इतिहास एवं तर्कशास्त्र पर जोर देने को वर्ग एवं वर्ग संघर्षों पर आधारित सूत्रों से भी जोड़ा गया। कार्ल मार्क्स ने अपने शैक्षिक सहयोगी एवं आजीवन मित्र फ्रेडिरक एंजल्स के साथ मिलकर इस बात को स्पष्ट किया अभी तक के इतिहास का ज्ञात काल वर्ग संघर्ष के रूप में देखा जा सकता है। जैसे, मार्क्स

और एंजल्स के अनुसार दास समाज में मालिक और दास वर्ग, जैसे सामंतवादी समाज में सामंत एवं सर्फ होते थे जबकि पूँजीवादी समाज में पूँजीवादी और कामगार होते थे। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व एवं नियंत्रण की प्राप्ति के लिए ये ऐसे प्रमुख वर्ग थे जो एक-दूसरे से संघर्ष करते थे।

मैक्स वेबर का संबंध समाजशास्त्र में क्लासिकी अवधि के युग से था। वेबर विविध विषयों पर अपने उत्कृष्ट लेखन के लिए समाजशास्त्र में काफी प्रसिद्ध हैं। मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को एक नई दिशा दी जिसके अंतर्गत उसने चिंतन एवं शोध के विविध एवं नये तरीके पेश किए। उसके चिंतन एवं विश्लेषण के तरीके आगस्ते काम्टे या ईमाइल दुर्खाइम से भिन्न थे। हमारी राय में मैक्स वेबर ने अपने विचारों की प्रस्तुति की थी जो कि बुनियादी तौर पर जर्मन चिंतन से संबंधित थे लेकिन फिर भी यूरोपियाई और पश्चिमी सुगंध भी बिखेर रहे थे। मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रिया से लेकर नौकरशाही तक विविध विषयों पर रचनाएँ लिखी हैं। इसके अलावा उसने सामाजिक विज्ञान की कार्य पद्धति जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में भी योगदान दिया है। यद्यपि मैक्स वेबर ने अपने निजी शब्दों एवं तरीकों में समाजशास्त्र को परिभाषित करने का प्रयास किया है लेकिन उसके द्वारा निर्मित वर्सिटीहेन जैसे कुछ निश्चित सूत्रों के लिए अभी भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। समाजशास्त्री अभी भी इस विचार से संघर्ष कर रहे हैं कि किस प्रकार सही मायने में मैक्स वेबर द्वारा विकसित चिंतन के पथ पर आगे बढ़ें।

मैक्स वेबर द्वारा विकसित कुछ सूत्रों के साथ किस प्रकार प्रयोग करें जैसे सोशल एक्शन, वर्सिटिहेन या फिनौमिलौजी नामक संकल्पनाएँ। यह अभी भी ऐसा क्षेत्र बना हुआ है जहाँ अभी भी काफी कुछ समझना बाकी है हालाँकि, नौकरशाही जैसी संकल्पनाओं के इर्द-गिर्द उदाहरण के तौर पर कुछ सफलता मिली है। अपनी सैद्धांतिक विषयवस्तु की दृष्टि से निस्संदेह मैक्स वेबर की संकल्पनाओं का उच्च मूल्य है लेकिन व्यावहारिकता की दृष्टि से यह अभी भी जटिल क्षेत्र बना हुआ है। उदाहरण के लिए, मैक्स वेबर ने सामाजिक कार्यवाही की व्याख्यात्मक समझ के रूप में समाजशास्त्र को परिभाषित किया। मैक्स वेबर निरंतर समाज पर बोलते रहे कि इसकी दो विशेषताएँ हैं : (i) ऐसी क्रिया करते समय नायक को अन्य नायक की उपस्थिति को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए और पूर्णतया या आंशिक रूप से इससे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए और (ii) नायक को इसमें व्यक्तिनिष्ठ अर्थ अवश्य जोड़ना चाहिए। मैक्स वेबर ने सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता बनाम विषयनिष्ठता संबंधी मुद्दों के बारे में भी लिखा है।

4. सामाजिक संरचना की संकल्पना की चर्चा, एक मॉडल के रूप में कीजिए।

उत्तर - अपने श्रेष्ठ काल्पनिक एवं सगोत्रीय प्रणाली के अनुप्रस्थ सांस्कृतिक विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध फ्रांस के संरचनावादी क्लाउड लेवी-स्ट्राउस का सामाजिक संरचना की अवधारणा में योगदान सर्वाधिक प्रेरक था। यदि प्रकार्यवादियों के लिए समाज अनेक हिस्सों वाला एक जीवित प्राणी है, जिसे विच्छेदित एवं वर्गीकृत किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर यह संरचनावादियों के लिए उस भाषा का सादृश्य है जो हमें समाज की अवधारणा करने में मदद करता है। भाषा के एक प्रदत्त अंश के अध्ययन करने पर भाषाविद् इसमें प्रयुक्त सिद्धांतों जो भाव को अर्थपूर्ण बनाते हैं, इसके व्याकरण तक पहुँचने का प्रयास करते हैं, यद्यपि उस भाषा के बोलने वाले इसके बारे में नहीं भी जानते। इसी प्रकार, संरचनावादी सामाजिक व्यवहार के एक प्रदत्त अंश से इसमें प्रयुक्त संरचना का अर्थ जानने का प्रयास करते हैं। संरचनावाद में स्थानांतरण दृश्य संव्यवहार से संरचना की ओर तथा जैविक सादृश्य से भाषा की ओर होता है।

पुनः संरचनावादी कहते हैं कि विभिन्न भागों के मध्य संबंधों का समूह उस 'कुछ' में बदल सकता है जो उसके मूल रूप से भिन्न होता है जो पूर्व में था। यह रूपांतरण का भाव है एक से दूसरे में जो संबंधों की विशेषता की अपेक्षा संरचनात्मकता के मर्म में रहता है। एडमंड लीच ने इसके समझने का उदाहरण इस प्रकार दिया : संगीत के एक अंश को कई तरह की

विविधताओं में रूपांतरित किया जा सकता है। इसे लिखा जा सकता है, पियानों पर बजाया जा सकता है, फोनोग्राफिक रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड किया जा सकता है। रेडियो पर प्रसारित किया जा सकता है और अंत में दर्शकों के मध्य अभिनीत भी किया जा सकता है। प्रत्येक अवस्था में, संगीत का अंश 'रूपांतरण की एक संपूर्णशृंखला' से गुजरता है। यह मुद्रित रूप में, अंगुलियों की गति के रूप में, ध्वनि की तरंगों के रूप में, बेकेलाइट के अंशों की नाली के आरोह-अवरोह में, विद्युत चुम्बन की कम्पन में और इसी प्रकार अन्य चीजों में भी। किंतु संगीत के इन समस्त प्रकटीकरण में एक संरचना है हालाँकि वह एक दूसरे से भिन्न है। प्रत्येक अपने नियमों से आबद्ध है किंतु उनकी संरचना एक सी है इसी तरह, अब विभिन्न समितियों में विविधता होती है, तब उनमें जो संगत (और आम) रह जाता है, वह है उनकी संरचना।

लेवी-स्ट्राउस के मतानुसार सामाजिक संरचना अध्ययन का क्षेत्र नहीं है, यह 'पूछताछ का कार्यक्षेत्र' भी नहीं है। हम सामाजिक संरचना का अध्ययन नहीं करते हैं अपितु यह एक व्याख्यात्मक प्रणाली है और इसका प्रयोग किसी भी प्रकार के सामाजिक अध्ययन में किया जा सकता है। रेडक्लि ब्राउन के विपरीत लेवी-स्ट्राउस का कहना है कि 'सामाजिक संरचना' शब्द का आनुभविक वास्तविकता से कुछ भी लेना-देना नहीं है। यह उन प्रतिमानों का उल्लेख करती है जो आनुभविक वास्तविकता से बने हैं।

लेवी-स्ट्राउस सामाजिक संरचना की अवधारणा को सामाजिक संबंधों से भिन्न मानते हैं। सामाजिक संबंध 'सामाजिक अनुभव' का कच्चा आँकड़ा है - यह मनुष्यों आनुभविक और दृष्टव्य के मध्य संबंध है। सामाजिक संबंधों से ही सामाजिक संरचना बनाने वाले अधिमानों का निर्माण होता है। यद्यपि अधिमान कच्चे आनुभविक वास्तविकता से निर्मित हैं, इन्हें उस स्तर तक नहीं गिराया जा सकता। किसी एक निर्दिष्ट समाज में सामाजिक संबंधों की समष्टि वर्णित की जा सकती है, किंतु सामाजिक संरचना एक मानवशास्त्री की अवधारणा है जो विश्लेषण के लिए बनी है।

लेवी-स्ट्राउस तीन भिन्नताएँ बताते हैं : प्रथम, प्रतिमान के ऊपर प्रेक्षण तथा प्रयोग, दूसरा प्रतिमानों का सचेतन और अवचेतन गुण तथा तीसरा मशीनी और सांख्यिकीय प्रतिमान। प्रतिमानों के 'प्रयोगों' से इन तथ्यों के उपरांत सामाजिक संबंधों के प्रेक्षण और प्रतिमानों के निर्माण में प्रतिमानों के प्रयोग की भिन्नता की आवश्यकता है। प्रयोग से लेवी-स्ट्राउस का आशय प्रेक्षित तथ्यों के लिए सर्वोत्तम माने जाने वाले प्रतिमानों की पहचान के उद्देश्य से उसी या दूसरी प्रकार के प्रतिमानों का 'नियंत्रित तुलना' से है। किसी ढाँचागत विश्लेषण में पहला कदम बिना किसी भेदभाव के तथ्यों का अनुपालन करना है। फिर उनको उनके स्वयं के संबंधों तथा समस्त तथ्यों के संबंधों में वर्णित करना है। इससे प्रतिमान निर्मित होते हैं और अंतिम विश्लेषण में सर्वोत्तम प्रतिमान का चयन किया जाता है। यह प्रभेद उस मानवशास्त्री के संदर्भ में है, जो समाज का अध्ययन करता है।

5. उद्यमशीलता क्या है? उद्यमशीलता पर शूमपीटर के दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए।

उत्तर - उद्यमशीलता की अभी तक कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं दी जा सकी है। उद्यमशीलता के अर्थ को लेकर अधिकतर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विचारकों का मत एक जैसा है जिसमें कुछ विशेष किस्म के संगठनों के विनियमन के लिए नियमन प्रक्रिया बनाने में प्रशासन का एक अंग और इसके प्रकार्य शामिल हैं। कुछ विद्वान सामरिक या नवीन निर्णयों से इस शब्द का अर्थ जोड़ते हैं जबकि अन्य व्यावसायिक संगठनों के लिए इस शब्द का प्रयोग करते हैं। इस शब्द को ऐतिहासिक संदर्भ में स्पष्ट किया जा सकता है। इस शब्द की उत्पत्ति फ्रांसीसी शब्द से हुई है जिसका अर्थ बहुत पहले 'कुछ काम करने के अर्थ' में लिया जाता था। प्रारंभिक 16वीं शताब्दी के दौरान जो सैन्य अभियानों में जुटे हाते थे, उन्हें उद्यमी कहा जाता था। 1700 के बाद, इस शब्द का प्रयोग बारम्बार सरकारी सड़क, पुल, बंदरगाह और मोर्चेबंदी संबंधी संविदाकारों और बाद में वास्तुकारों के लिए फ्रांसीसियों द्वारा किया गया। 1800 में यह शब्द शैक्षिक विषय में नजर आने लगा क्योंकि इसका प्रयोग बहुत से फ्रांसीसी अर्थशास्त्रियों द्वारा किया जाने लगा था जिन्होंने इस शब्द का प्रयोग विशिष्ट रूप से अर्थशास्त्र के क्षेत्र में किया जिसने उद्यमी

और उद्यमशीलता को विशिष्ट अर्थ दिया था जहाँ भेद अधिकतर अर्थव्यवस्था के खंडों की विशेषताओं में उभरा और जो अर्थशास्त्री सरकार में रुचि रखते थे, उन्होंने उद्यमी को संवीदाकार, कृषक और उद्योगपति के रूप में लिया जो जोखिम उठाने वाले पूँजीपति के रूप में देखे जाते थे। हालाँकि उद्यमी और उद्यमशीलता शब्दों का प्रयोग विभिन्न समय में विद्वानों द्वारा विविध संदर्भों में किया गया है।

सक्म्प्टर का योगदान : सक्म्प्टर ने अपने जीवन काल में विविध चरणों पर उद्यमशीलता के विविध सैद्धांतिक पहलुओं पर गौर किया था। उसने असल में मनोविज्ञान, आर्थिक सिद्धांत, आर्थिक इतिहास और समाजशास्त्र सहित विविध किस्म के उपागमों का प्रयोग किया था। सक्म्प्टर ने सबसे पहले आर्थिक सिद्धांत में उद्यमशीलता के सक्षम इतिहास का प्रतिपादन किया और इस संदर्भ में आर्थिक विचारधारा का इतिहास उसके ऐसे उपागम से काफी प्रभावित है जो अभी भी शैक्षणिक क्षेत्र पर हावी है।

यद्यपि सक्म्प्टर ने बहुविज्ञता एवं बहु-विषय उपागम का अनुसरण किया फिर भी जैसा कि उसकी रचनाओं से पता चलता है उसने कभी उद्यमियों के व्यवहार के लिए कोई ठोस मार्गदर्शन का निर्माण नहीं किया जैसा कि बिजनेस स्कूल इसे सूत्रबद्ध करते आ रहे थे। सक्म्प्टर ने बारम्बार इस ओर इशारा किया कि जब साधारण आर्थिक व्यवहार कमोबेश स्वचालित है, उद्यमी को सदैव ऐसे कार्यों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है जिसे ऐसे लिया जाना चाहिए मानो उद्यमी को कुछ ऐसा करने में शामिल किया गया है जो कि मूल रूप से नवीन है। यह ऐसी अंतर्दृष्टि है जो काफी महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है जैसे कोई ऐसा नवीन काम करता है लेकिन उसे यह नहीं पता कि आगे कैसे बढ़ना है और इसलिए उसे नवीन मार्गदर्शन की जरूरत है।

पूँजीवादी प्रक्रिया का विचार जो कि सक्म्प्टर आर्थिक सैद्धांतिक विश्लेषण में मुख्य बिंदु हैं, का अर्थ है कि वृत्तीय प्रवाह (सरकुलर फ्लो) जैसा कि सक्म्प्टर द्वारा विकसित किया है, इसे प्रवर्त्तकों एवं उनके अनुयायियों द्वारा वितरित और परिवर्तित किया जाता है। कुछ निश्चित तकनीकी आर्थिक दशाओं के आधार पर बिजनेस मुनाफा कमाना शुरू कर देता है, यहाँ तक कि जब वर्धित उत्पादन के परिणामस्वरूप बाजार कीमतें गिरने लगती हैं। यहाँ महत्त्वपूर्ण बात है कि समुचित वृत्ताकार प्रवाह में बँटने वाला आक्रामक उद्यमी जिसके पास धारण करने को कुछ नहीं है, वह नवाचार के विचार को सुदृढ़ करेगा, सुस्थापित फर्मों की अड़चनों को दूर करने की उसकी सफलता, उसके बल या अनुकूलन ऐसा महत्त्वपूर्ण बिंदु है जिस पर सक्म्प्टर अपने समग्र कैरियर के दौरान परिवर्तनशीलता के साथ अंत:क्रिया करता है। उद्यमी के सिद्धांत को विकसित करने में सक्म्प्टर का पहला प्रयास आर्थिक विकास के सिद्धांत में देखा जा सकता है। उसके अग्रणी कार्य में उसने पूर्णतया नया आर्थिक सिद्धांत बनाने का प्रयास किया और पिछले अर्थशास्त्रियों की उपलब्धियों की ओर कम ध्यान दिया। इस संदर्भ में उसका तर्क था कि अर्थव्यवस्था में सभी महत्त्वपूर्ण बदलाव उद्यमी द्वारा शुरू किए जाते हैं और ये परिवर्तन तब धीरे-धीरे आर्थिक पद्धति अर्थात् व्यावसायिक चक्र के माध्यम से अपने बलबूते पर काम करते हैं। सक्म्प्टर ने इस बात को भी माना कि उसके सजातीयता के विचार ने बदलाव को उत्पन्न किया जो कि ऐसे परिवर्तन से उलट था जिसे बाहरी बलों ने पेश किया था जो कि न सिर्फ आर्थिक घटनाओं बल्कि सभी सामाजिक घटनाओं पर भी लागू था और इसे दो किस्म की गतिविधियों के रूप में देखा जा सकता था, एक तरफ से ये सृजनात्मक और नवीन गतिविधियाँ थीं जबकि दूसरी तरफ आवर्तक एवं मशीनी गतिविधियाँ।

भाग II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

6. लोकतंत्र में सिविल समाज की भूमिकाओं और प्रकार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - लोकतंत्र में नागरिक समाज की भूमिका या कार्य पर प्रकाश डालते हुए लारी डायमंड ने अपने लेख 'रिथिंकिंग सिविल सोसायटी' में उल्लेख किया है कि 'नागरिक समाज लोकतंत्र को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।' उसका विचार है कि लोकतांत्रिक नागरिक समाज में इस प्रकार की संभावनाएँ अधिक हैं कि लोकतंत्र का उदय होगा और वह स्थायी होगा।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिक समाज के कार्य इस प्रकार हैं :

(1) राज्य के राजनीतिक दुर्व्यवहार और कानूनी उल्लंघन को रोक कर तथा जनता द्वारा इसकी छानबीन कर राज्य शक्ति को सीमित करना। डायमंड का यह दृढ़ मत है कि नागरिक समाज लोकतंत्र की शुरुआत करने से अधिक लोकतंत्र को बनाए रखने व मजबूत करने के लिए आवश्यक है।

(2) लोकतंत्र नागरिकता के अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति उत्साह में वृद्धि करके तथा लोकतांत्रिक नागरिकों की राजनीतिक कुशलता एवं कौशल में वृद्धि के माध्यम से नागरिकों को सशक्त करना।

(3) नागरिकों में लोकतांत्रिक गुणों, जैसे : सहनशीलता, विनम्रता, समझौते करने की इच्छा तथा विरोधी विचारों का सम्मान करना, को पैदा करना एवं विस्तार देना। डायमंड के अनुसार यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है क्योंकि यह परंपरागत रूप से अलग किए गए समूहों जैसे महिलाओं, जातीय और वंशानुगत अल्पसंख्यकों को सत्ता तक पहुँचने का अवसर प्रदान करता है जिनसे उन्हें औपचारिक राजनीति के उच्च गलियारों द्वारा वंचित रखा गया है।

(4) राजनीतिक दलों एवं अन्य संस्थाओं को अपने हितों को प्रस्तुत करने के लिए मुखर एवं एकत्र होने के अवसर प्रदान करना। इससे लोकतंत्र की गुणवत्ता में वृद्धि होती है क्योंकि यह प्रशासन के हर स्तर पर प्रतिभागिता और प्रभावित करने के अवसर पैदा करता है और स्थानीय शासन में भी ऐसे अवसर उत्पन्न होते हैं।

(5) भर्ती करने, सूचना और नेतृत्व पैदा करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करना-विशेषत: आर्थिक रूप से विकसित उन देशों में जहाँ कभी-कभी आर्थिक सुधार आवश्यक तो होते हैं परंतु कर पाना कठिन होता है क्योंकि इससे निहित आर्थिक स्वार्थों को खतरा होने लगता है। इंडोनेशिया में आर्थिक व्यवस्था के ढह जाने से बड़े पैमाने पर असंतोष फैल गया जिससे अचानक ही राष्ट्रपति सुहार्तो संदेह के घेरे में आ गए। इससे वातावरण में बदलाव आया जिसने नागरिक समाजों और विपक्षी दलों को अप्रत्याशित ढंग से लामबंद होने की छूट दी।

(6) एक सुदृढ़ आधार वाला नागरिक समाज झटके सहन करने में सक्षम होता है जहाँ हितों की एक लंबी शृंखला एक दूसरे को लाँघ कर राजनीतिक विवाद को शांत करती हों।

(7) सफल आर्थिक एवं राजनीतिक सुधारों को प्रारंभ करना, जिसके लिए समाज और विधायिका में गठबंधनों के सहयोग की जरूरत होती है।

(8) एक मजबूत आधार वाला नागरिक समाज नए राजनीतिक नेतृत्व की पहचान एवं उसे प्रशिक्षित करता है। इस प्रकार से यह सीमित और पुराने ढंग से दलीय प्रभुता वाले नेताओं को भर्ती करने के तौर-तरीकों में नई ऊर्जा भरने में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

7. आधुनिकीकरण और आधुनिकता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - आधुनिकीकरण आधुनिक शब्द से बना है। आधुनिक का अर्थ गत्यात्मकता होता है और गत्यात्मकता का अर्थ होता है, परंपरावादी विचारों, मान्यताओं, आदर्शों आदि को छोड़कर नवीन विचारों और मूल्यों को आत्मसात् करना। आधुनिकीकरण का सिद्धांत हमें यह बताता है कि किस प्रकार विश्व के विभिन्न भाग औद्योगिक सत्ताओं से विकसित हुए तथा ये स्पष्ट करते हैं कि ऐसा कैसे एवं क्यों हुआ? आधुनिकीकरण सिद्धांत ने पारंपरिक समाजों और आधुनिक समाजों के बीच के अंतर को स्पष्ट किया। पारंपरिक समाज वे थे जो कि बड़े पैमाने पर वैयक्तिक एवं स्वाभाविक किस्म के थे और जो कि बाजारी संबंधों की तुलना में निम्न थे। दूसरी तरफ आधुनिक समाज तटस्थ थे और बाजार एवं पर्यावरण का शोषण करने की क्षमता रखते थे।

समाज की एक प्रमुख संस्था है, परिवार और इसकी प्रकृति जो कि पुन: पारंपरिक एवं आधुनिक समाजों में भिन्न है। पारंपरिक समाजों में परिवार बहुत से कार्यों के लिए उत्तरदायी था। इसके विविध कार्य थे और इसमें धर्म, कल्याण, शिक्षा, प्रजनन एवं संवेगात्मक व्यूह रचना जैसे मुद्दों का समावेश था। दूसरी तरु आधुनिक समाज में परिवार का कार्य राज्य के क्षेत्र या दायरे से जुड़ा हुआ होना था। इस सिद्धांत में सामाजिक अवरोध उत्पन्न होता है जब समाज के कुछ या एक भाग अपेक्षित अनुमान से निम्न दर्जे का काम शुरू करने लगते हैं। ऐसे अवरोधों में शामिल हैं, शांतिपूर्ण/हिंसा प्रदर्शन, क्रांति, गुरैला युद्ध एवं अब आतंकवाद। हालाँकि ऐसी गतिविधियों का एक कष्टदायक पहलू भी है क्योंकि कोई व्यक्ति विशेष व संस्था जो राज्य को उत्तेजित करती है तो उसे ऐसा करने से कड़ा रुख अपना कर रोका जाता है। इन कार्यों को मानवतावादी आधरित कहा जाता है। मानव अधिकारों का प्रश्न हाल ही की परिघटना है और संगठनों को ध्यान देना होगा कि किसी भी कीमत पर लोकतंत्रका उल्लंघन न हो।

आधुनिकता आधारित उपागम- ऐसे कम से कम दो उपागम हैं जो इस विवेचना से संबंधित है कि आधुनिकता किस प्रकार अस्तित्व में आई। इस बात को समझाने के तरीके हैं कि क्या मौजूदा समाज को उस समय से अलग बनाता है जिसने मनुष्य को आधुनिकता के दायरे में आने से पहले अपनी सीमा में कायम किया हुआ था।

एक विधि समकालीन पश्चिमी समाज एवं संस्कृति और मध्यकालीन यूरोप में व्याप्त अंतरों को उस निगाह से देखती है जो मध्यकालीन यूरोप एवं मध्यकालीन भारत के बीच के अंतरों से मिलते-जुलते थे। अत: हम सभ्यताओं के बीच के अंतर के बारे में सोच सकते हैं और उसका विश्लेषण कर सकते हैं। दूसरी तरु इस बात को इस नजरिए से भी सोचा जा सकता है कि जहाँ परंपरागत समाज की समाप्ति होती है और आधुनिक समाज की शुरुआत होती है। यह परिप्रेक्ष्य अधिक प्रभावी है और यह ऐसा विश्लेषण प्रदान करता है जो विविध परिप्रेक्ष्य देता है। पहले उल्लिखित उपागम सांस्कृतिक उपागम है और दूसरा इसके विपरीत गैर-सांस्कृतिक उपागम है। सांस्कृतिक उपागम में ऐसी बहुत सी संस्कृतियाँ हैं जिनमें भाषा एवं सांस्कृतिक व्यवहार शामिल हैं जो हमें स्वयं मनोवैज्ञानिक ढाँचों, धर्म, नैतिकता को समझने में सहायता करते हैं। ये कारक किसी एक संस्कृति में विशिष्ट होते हैं और अक्सर अतुलनीय होते हैं। उपर्युक्त को ध्यान में रखकर आधुनिकता का सांस्कृतिक सिद्धांत पहले और तब नई संस्कृति में होने वाले बदलाव का विश्लेषण करता है। मौजूदा विश्व को आत्म एवं नैतिकता की विशिष्ट विवेचना वाली संस्कृति के रूप में देखा जा सकता है। अत: आधुनिकता के इस मॉडल को सभ्यता के पिछले पहलुओं से तुलना करने के रूप में देखा गया है और इस संदर्भ में इसका वैश्लेषिक प्रयोग भी किया गया है। दूसरी तरफ गैर-सांस्कृतिक सिद्धांत कुछ सांस्कृतिक तटस्थ विश्लेषण की दृष्टि से समग्र प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। यह दर्शाता है कि समग्र प्रक्रिया उस समय मौजूद संस्कृति की दृष्टि से विश्लेषित नहीं की जाती जो कि बाद में आधुनिकता में बदल गई। बजाए इसके यह ऐसे उपागम पर आधारित है जिसे कि ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जिसका सामना परंपरागत समाज को करना है। अत: गैर-सांस्कृतिक सिद्धांत तर्क आधारित आधुनिकता पर आधारित है जैसे कि वैज्ञानिक चेतना की वृद्धि, धर्मनिरपेक्ष सोच का विकास, तथ्यों की प्राप्ति एवं विकास।

8. अस्मिता और अभिनिर्धारण के संबंध की जाँच कीजिए।

उत्तर -

'पहचान करना' विभिन्न संदर्भों में आमतौर पर प्रयोग होने वाले साधारण शब्द हैं। इसका औपचारिक प्रयोग साइमंड फ्रेड द्वारा मनोविज्ञान में एक प्रक्रिया को स्पष्ट करने में किया गया जिसमें एक बच्चा बाह्य व्यक्तियों और वस्तुओं के साथ अपना संबंध बनाता है और खुद को उनसे जोड़ता है। इस सिद्धांत का समाजीकरण प्रक्रियाओं का मनोविश्लेषक वर्णन करने हेतु एक प्रमुख यंत्र के रूप में प्रयुक्त किया गया। चालीस और पचास के लगभग दो दशक तक पहचान करने का सिद्धांत मनोविश्लेषक समझ तक ही सीमित रहा। 1954 में गोर्डन डब्ल्यू एलपोर्ट ने पहचान करने की धारणा को अपनी कृति 'द नेचर ऑफ प्रीज्यूडिस' में संजातीयता को खोजन के लिए किया।

समकालीन समाज विज्ञानी इस प्रकार के आग्रह की कमजोरियों को समझते हैं जैसा कि हम सब जानते हैं कि व्यक्ति किसी सजातीय समूह के साथ अपनी सदस्यता को इस लिए स्वीकार नहीं करते हैं कि हमारे पिता ने कहा है और मैं इसमें विश्वास रखता हूँ। इस अध्याय के अंतिम भाग में हम विभिन्न शैलियों की चर्चा करेंगे जो व्यक्ति के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में दखल देकर उसे पहचान के चिह्न और पहचान का आग्रह प्रदान करती हैं। यद्यपि यहाँ यह कहना महत्वपूर्ण है कि पहचान निर्माण एवं इनके सिद्धांतों के क्रमिक विकास के इतिहास में एलपोर्ट के योगदान ने पहचान की धारणा को राल्फ लिंटन और मर्टन द्वारा प्रचलित भूमिका और संदर्भ समूहों के सामाजिक सिद्धांतों के साथ जोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया। फूट (1951) ने अनुभव किया कि लिंटन का 'भूमिका सिद्धांत' में प्रेरणा तत्व के संतोषजनक व्यौरे का अभाव है इसलिए यह बेहतर होगा कि पहचान के सिद्धांतों को इस प्रकार तैयार किया जाए कि ये सामाजिक व्यवहार में प्रेरणा का वर्णन कर सकें। फूट ने पहचान शब्द के अपने द्वारा प्रयोग किए जाने तथा फ्रेड द्वारा प्रयोग किए जाने में भेद किया। फूट ने पहचान करने को इस प्रकार परिभाषित किया 'एक व्यक्ति द्वारा स्वयं को किसी विशेष पहचान अथवा पहचान श्रृंखला के साथ जोड़ना तथा उसके प्रति निष्ठा'। पहचान नामकरण के साथ आगे बढ़ती है और इसका अर्थ है कि जिस व्यक्ति को नाम दिया गया है और उसने स्वीकार किया है वह व्यक्ति स्वयं को उस पहचान के साथ निष्ठा से जोड़ता है। दूसरे शब्दों में, वह परिवार, वंश, अपनों के धर्म, कार्य, गतिविधि एवं अन्य गुणों के आधार पर दिए गए वर्ग के साथ जुड़ने को स्वीकार करता है।

इस प्रकार निर्मित पहचान की प्रक्रिया इन पहचानों को अपनाने का अवसर प्रदान करती है। यह पहचाने गए वर्ग के साथ जुड़ने को बढ़ावा देती है और 'आत्म स्वामित्व' की भावना को विकसित करती है। 'आत्मखोज' और आत्म यथार्थीकरण की प्रक्रिया आरंभ होती है - यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो स्वैच्छिक है और समाज द्वारा थोपी हुई नहीं है। यह अलग बात है कि जब व्यक्ति बड़ा होता है तो सचेत चयन के आधार पर अपनी पहचान को अधिक प्रभावशाली ढंग से बनाता और सुधारता रहता है जो कि एक बच्चे या युवा व्यक्ति के लिए कम संभव है।

जे.मिल्टन पहचानीकरण का आत्मसात करने के प्रक्रिया के परिणाम के रूप में परीक्षण करता है। वह कहता है कि अलग-अलग समूहों के व्यक्ति स्वयं को एक ही समाज, एक नये समाज के साथ सम्बद्ध मान सकते हैं जो उनके मूल समाजों के साथ घुला-मिला है। पहचान के विचारकों का संदर्भ अमरीका ही रहा, जैसा कि पहले भी कहा गया है। गत दो सौ वर्षों में अमरीका में स्थानांतरित हुए प्रवासी, समूह पहचान के कई पहलुओं से गुजर चुके हैं। कभी ये समूह श्वेतों की संस्कृति के समक्ष हथियार डाल देते हैं तो कभी ये अपनी पारम्परिक संजातीय पहचान का आग्रह करते हैं तथा प्रमुख संस्कृति के साथ अपनी पहचान से इंकार करते हैं।

सिद्धांत रूप में बोलते हुए यिन्गर कहते हैं कि पहचान में बदलाव वास्तव में व्यक्ति की मनोस्थिति से जुड़ी नहीं होती अपितु इसका निर्धारण सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से होता है। यह बदलाव एक तरफा हो सकता है जैसे समूह 'क' के सदस्यों की पहचान समाज 'ख' के साथ जुड़ सकती है अथवा समूह 'ख' के सदस्यों की पहचान समाज 'क' से जुड़ सकती है। पहचान की यह तीनों प्रक्रियाएं एक साथ चल सकती हैं जो लोगों को अपने आप को सीधे-सादे ढंग से अमरीकी, हिसपैनिक, अफ्रीकी अथवा एशियाई अमरीकी के रूप में पहचान जताने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह भी उतना ही सत्य है कि पूरे अमरीकी इतिहास में कुछ लोग अपने आप को भारतीय पहचान देने के लिए प्रयास करते रहे, उन्होंने पारंपरिक ग्रामीण परिवेश में रहना पसंद किया और गांव का मुखिया बनना भी स्वीकार किया। यिन्गर यह निष्कर्ष निकालता है कि कभी तो पहचान संजातीय व्यवस्था में एक मुख्य परंतु आकस्मिक प्रभाव है और कभी यह स्पष्ट रूप से जुड़ाव, यथार्थीकरण और समिश्रण पर निर्भर दिखाई देता है (1997 : 137-139)। यह जान लेना आवश्यक है कि आत्म पहचान तथा दूसरों द्वारा पहचान करने में एकरूपता होना अनिवार्य नहीं है। व्यक्ति अथवा समूह अपने आपको किसी राष्ट्रीयता अथवा क्षेत्र से जोड़ सकते हैं परंतु दूसरे उन्हें ऐसा मानने से इंकार कर सकते हैं। उत्तर-पूर्व में संजातीय संघर्ष अथवा कश्मीर में विस्थापित जनसंख्या इस प्रारूप के अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। यिन्गर यहाँ एक महत्वपूर्ण बात कहता है कि एक समूह के सदस्यों के बीच एकता किसी खुले समाज के साथ पहचान बनाने की प्रक्रिया में बाधक हो सकती है (उपर्युक्तः 140)।

9. जेंडर स्तरीकरण में जाति के मूलतत्वों की चर्चा कीजिए।

उत्तर – कल्पना बर्धन के अनुसार 'चाहे वर्ग पर या जाति विश्लेषण पर आधारित हो, परिवार स्तरीकरण अध्ययनों के लिए विश्लेषण की प्रमुख इकाइयाँ हैं। विस्तृत ढाँचे में यह पर्याप्त रूप से स्थित नहीं है कि लिंग द्वारा विभाजन एवं महिलाओं की स्थिति स्थायित्व एवं गतिशीलता संबंधी इसके गुणधर्मों को प्रभावित करती है।'

भारतीय समाज में नातेदारी की भूमिका, स्तरीकरण की बुनियादी इकाई के रूप में परिवार एवं रोजाना के संबंधों के अलावा, परिवार के पुरुष मुखिया की भूमिका एवं पुरुष व महिलाओं के बीच स्थिति संबंधी समानता ऐसे कुछ प्रश्न हैं जिनकी जाँच करने की जरूरत है। माइकल मान पितृसत्ता, अर्थव्यवस्था एवं वर्ग संरचना की चर्चा करता है। माइकल मान के अनुसार महिलाओं का कोष्ठीकरण, राजनीति में महिलाओं की सहभागिता, विकास कार्यक्रम एवं प्रक्रमों व नारीत्व के बावजूद भी कायम है। भारतीय समाज को पुरुष जाति और स्त्री जाति में विभाजित किया गया है। महिलाओं की संकल्पना बनाते समय तथा उनके बारे में लिखते समय नीता कुमार चार तरीकों पर प्रकाश डालती है अर्थात् महिलाओं को नायिका के रूप में देखते हुए और उन्हें पुरुषों के विशेषाधिकार देते हुए महिलाओं को मानव 'टकटकी' का केंद्रबिंदु बनाना; पितृसत्ता पर ध्यान देते हुए सैद्धांतिक तर्कमूलक दायरे में महिलाओं की मौजूदगी को देखना और जो उन्हें निरंतर इस दायरे में बाँधे रखती है और बाहर निकलने का कोई अवसर नहीं देना; ऐसे प्रछन्न तरीकों पर गौर करना जिनके चलते महिलाएँ अपने कार्यों को पूरा करती हैं। वह कुछ प्रश्न उठाती है जैसे विषयों के रूप में महिला होने की इच्छाशक्ति और पौरुष को हटाकर नारीत्व को उजागर करना।

मोनिशा बहल के अनुसार जिसने पश्चिम उत्तर प्रदेश में मणिपुर जिले में काम किया, वहाँ के ग्रामों में महिलाओं का जीवन उदासी से भरा है। इसका कारण है, काम का अत्यधिक भार, खराब स्वास्थ्य एवं निर्धनता। महात्मा गाँधी का नजरिया की चूँकि महिला पुरुष की जननी है, इसलिए पीड़ा सहने की इसमें अनंत क्षमता है अर्थात् इस नजरिए पर भी आलोचनात्मक ढंग से विचार किया गया। जोएना लिडल एवं रमा जोशी ने जेंडर, जाति और वर्ग के बीच के अंतः संबंधों के संदर्भ में भारतीय

महिलाओं का अध्ययन किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि उच्च पितृसत्तात्मक जातियों ने जाति एवं लिंग संबंधी विभाजन को और अधिक कस दिया क्योंकि उन्होंने इस उत्तमावस्था के लिए उनकी आर्थिक उत्तमावस्था एवं प्रतिरक्षित चुनौतियों को समेकित कर दिया था।

भारत में महिलाओं के आंदोलनों ने मुख्यता ऐसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है जो सर्वव्यापक हैं जैसे महिलाओं के प्रति हिंसा, कार्य संबद्ध असमानताएँ, शिक्षा एवं रोजगार तक पहुँच, स्वास्थ्य, गृहिणियों के कार्य को सामाजिक मान्यता एवं उनके कार्य के लिए पारिश्रमिक। राजनीतिक दमन एवं महिलाओं को महत्त्व न मिलना, मूल्य वृद्धि आदि। जीवन के विविध भागों में शोषण एवं उत्पीड़न के मुद्दों को उठाना अर्थात् परिवार, विवाह, अर्थव्यवस्था, धर्म एवं राजनीति आदि जैसी जगहों पर ध्यान देकर नारीवादी विविध भारतीय संदर्भों में जेंडर मुद्दों के विस्तृत परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हर किस्म की रचना में यह माना गया है कि पितृसत्ता, स्तरीकरण व्यवस्था एवं महिलाओं की स्थिति गूढ रूप से अंत:संबद्ध है और महिलाओं की स्थिति में किसी भी किस्म के सकारात्मक बदलाव का अर्थ पितृसत्ता और स्तरीकरण व्यवस्था पर प्रहार करने जैसा होगा। सांकेतिक विश्लेषण के माधयम से असमान व्यवहारों को गूढ रूप से जमे सांस्कृतिक मूल्यों के रूप में व्यक्त किया गया है जो कि पुरुषत्व एवं नारीत्व की संज्ञा देते हैं। लीला दुबे जेंडर विषमता की पुष्टि के रूप में विविध पितृसत्तात्मक संस्कृतियों में 'बीज' और धरती की लाक्षणिक संकल्पनाओं का प्रयोग करते हुए स्त्री एवं पुरुष के बीच के संबंध की चर्चा करती हैं।

10. नागरिकता क्या है? इसके विविध प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर - प्राचीन समय से ही एक राजनीतिक समुदाय की वैध सदस्यता के रूप में नागरिकता को परिभाषित किया गया है। विद्वानों के अनुसार नागरिकता का अर्थ केवल सरकार का नागरिकों पर अधिकार होना ही नहीं बल्कि नागरिकों का सरकार पर अधिकार भी है। सरकार भी समाज में अन्य संस्थाओं की भाँति एक संस्था है। परंतु यह एक विशेष प्रकार की संस्था है जो साधारण रूप से उदासीन अथवा बच कर नहीं रह सकती। लोकतंत्रवादियों का यह सोचना ठीक है कि सरकार नागरिकों पर नियंत्रण रखती है, इसलिए लोगों का भी सरकार पर कुछ न कुछ नियंत्रण होना चाहिए। सबसे अच्छी सरकार वही है जिसमें अधिकाधिक लोग पूरे समाज के लिए निर्णय लेने में भागीदारी करें। साधारण लोगों की इस भागीदारी को ही नागरिकता कहते हैं। नागरिकता का विचार सरकार में लोगों की भागीदारी से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार लोकतंत्र और नागरिकता के प्रति विचार परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्राचीन काल से ही नागरिकता को एक राजनीतिक समुदाय की वैध सदस्यता के रूप में परिभाषित किया गया है। रोम की न्याय व्यवस्था के अंतर्गत नागरिकता का अर्थ कानून के अनुसार व्यवहार करने की स्वतंत्रता तथा कानून से सुरक्षा माँगने और अपेक्षा करने की स्वतंत्रता थी। ग्रीक और रोम से जन्मी तथा मध्य युग में नगर-राज्यों में प्रचलित और 19वीं तथा 20वीं सदी में पूँजीवादी समाजों में तेजी से फैली यह विचारधारा प्रारंभ से ही पश्चिमी विचारधारा है।

राजनीतिक और कानूनी सिद्धांतों के अनुसार नागरिकता का अभिप्राय किसी राष्ट्र राज्य अथवा नगर के सदस्य के अधिकारों एवं कर्त्तव्य से है। पुराने यूनान में नागरिकता केवल स्वतंत्र पुरुषों तक सीमित थी जिन्हें राजनीतिक बहस में हिस्सा लेने का अधिकार था क्योंकि वे प्राय: सैन्य सेवा के माध्यम से नगर राज्य के सीधे सहयोग एवं समर्थन में अपना योगदान देते थे।

प्रकार: -

पहला प्रकार राष्ट्रीय नागरिकता है, आमतौर पर जातीय-राष्ट्रवाद से जुड़ा हुआ है, जो 19 वीं शताब्दी से राष्ट्र निर्माण प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण रहा है। कई एशियाई समाजों में, इस प्रकार की नागरिकता भी तथाकथित विकासात्मक राज्य के साथ निकटता से जुड़ी थी और कोरियाई युद्ध के बाद सत्तावादी राज्यों में महत्वपूर्ण हो गई थी। लैटिन अमेरिका में, राष्ट्रीय

नागरिकता विभिन्न राष्ट्र-निर्माण परियोजनाओं के साथ भी जुड़ी हुई थी। लैटिन अमेरिका ने भाग में इबेरियन उपनिवेश के ऐतिहासिक परिणाम के रूप में राष्ट्रवादी नागरिकता के एक सत्तावादी और सैन्यवादी संस्करण का अनुभव किया। इस राजनीतिक गठन को political नौकरशाही अधिनायकवाद '(O'Donnell, 1999) के रूप में प्रसिद्ध रूप से परिभाषित किया गया है। फिलीपींस में सत्तावाद और सैन्यवाद का एक समान अनुभव रहा है जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक भ्रष्टाचार और कमजोर आर्थिक विकास का अशांत राजनीतिक इतिहास रहा है।

थो दूसरा रूप सामाजिक नागरिकता है, जो राज्य या बाजार के बजाय नागरिक समाज संस्थानों से निकटता से जुड़ा हुआ है। इसमें कल्याणकारी राज्य के विकास के साथ सामाजिक अधिकारों का निर्माण शामिल है और इसे केवल 'कल्याण नागरिकता' के रूप में संदर्भित किया जाता है। 20 वीं शताब्दी में, नागरिकता का यह रूप स्कैंडिनेवियाई समाजों में और यूनाइटेड किंगडम में सामाजिक पुनर्निर्माण के बाद की अवधि में लोकतांत्रिक विकास का उत्पाद था, जब कीनेसियन आर्थिक रणनीति एक टूटी हुई अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण थी। वास्तव में, ब्रिटिश कल्याणकारी राज्य को मूल रूप से 1930 के दशक में with युद्ध राज्य 'के विकल्प के रूप में समझा गया था जो जर्मन फासीवाद से जुड़ा था।

नागरिकता का तीसरा रूप कार्यबल में भागीदारी के साथ नागरिक की पहचान करता है, आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता पर जोर देता है। इस प्रकार की नागरिकता, जो अमेरिकी नागरिकता (1991) में राजनीतिक दार्शनिक जूडिथ शकर द्वारा पूर्व-खोज की गई थी, अमेरिकी उदारवाद से जुड़ी है। राज्य-प्रबंधित कल्याण प्रणाली की अनुपस्थिति में, नागरिकता के अमेरिकी पैटर्न में बीमा, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण के निजी प्रावधान की आवश्यकता थी। ये तीनों रूप पूरी तरह से अलग नहीं थे और विभिन्न संयोजन हमेशा संभव थे, नागरिकता की संकर परंपराओं का उत्पादन; नतीजतन, उन्हें केवल आदर्श प्रकार के रूप में सुविधा के लिए माना जा सकता है।

इस चर्चा में, मेरा तर्क है कि आर्थिक वैश्वीकरण और नवउदारवादी रणनीतियों के विकास के साथ, नागरिकता के विभिन्न रूप निष्क्रिय नागरिकता के एक नए मॉडल की दिशा में परिवर्तित हुए हैं जिसमें राज्य पूर्ण रोजगार के प्रति प्रतिबद्धता और सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान से पीछे हट गए हैं। , विशेष रूप से कल्याणकारी सेवाओं, और नागरिक समाज संस्थानों के सार्वभौमिक प्रावधान को मिटा दिया गया है। नागरिक समाज के बजाय बाजार नागरिकता के लिए संस्थागत सेटिंग बन गया है। इसका परिणाम उपभोक्ता के रूप में राजनीतिक, अलग-थलग नागरिक का उभरना है (स्ट्रीक, 2012)। रोजगार की प्रकृति में परिवर्तन के साथ - आउटसोर्सिंग, आकस्मिक रोजगार, कामकाजी गरीब और बड़े अंडरक्लास का निर्माण - रोजगार अब जूडिथ शक्कर द्वारा अनुमानित स्वतंत्रता और स्वायत्तता की शर्तों की गारंटी नहीं देता है, और इसके बजाय, श्रम बाजार की अग्रणी में ये उभरती परिस्थितियां कम वेतन पर एक अनिश्चित जीवन के लिए, बेरोजगारी और रोजगार की असुरक्षा, उदाहरण के लिए बारबरा एरेन्रेइच ने अपनी पुस्तक निकेल एंड डीम्ड (2001) में वर्णित किया है।

नागरिकता का चौथा मॉडल एक उपभोक्ता समाज, एक कमजोर राज्य और नागरिक संस्थानों की गिरावट को रोकता है, जहां निष्क्रिय नागरिक निजीकृत वस्तुओं और सेवाओं का उपभोक्ता बन जाता है। जब इन्हें ऑनलाइन खरीदा जाता है, तो निष्क्रिय नागरिक को शॉपिंग करने के लिए मॉल में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं होती है और नया व्यक्तिवाद निष्क्रिय अलगाव में से एक है। बुर्जुआ नागरिक के लिए बातचीत के पारंपरिक स्थल - कैफे, मीटिंग हॉल, चैपल और क्लब - को ऑनलाइन नेटवर्क द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, और सामाजिक एकजुटता y चिपचिपा '(इलियट और टर्नर, 2012) के बजाय लोचदार है। क्या ये नई इलेक्ट्रॉनिक साइटें व्यवहार्य ऑनलाइन समुदायों के निर्माण के स्थानों के रूप में कार्य कर सकती हैं, शायद नागरिकता अध्ययन के लिए सबसे अधिक अनुभवजन्य अनुसंधान प्रश्न है